مدرستنا الثانوية الإنجليزية، الشارقة
OUR OWN ENGLISH HIGH SCHOOL, SHARJAH
A GEMS SCHOOL

GEMS EDUCATION

HINDI CURRICULUM

MIDDLE SCHOOL 2024-25

अनुक्रमणिका –

- प्रस्तावना
- उददेश्य
- पाठ्य–सामग्री
- शिक्षण युक्तियाँ
- परीक्षामूल्यांकन

कक्षा 6 से 8

भाषा एक औजार है जिसका इस्तेमाल हम ज़िंदगी को समझने के लिए, उससे जुड़ने के लिए और जीवन–जगत को प्रस्तुत करने के लिए करते हैं। यह सब करने के लिए जाँच–पड़ताल, तर्क, संप्रेषण जैसे कौशलों की जरूरत होती है। इसके साथ–साथ भाषा यानी बहुभाषिकता हमारी पहचान भी है और हमारी सभ्यता व सस्ंकृति का अभिन्न अंग भी। इसलिए यह आवश्यक है कि हिंदी सीखने– सिखाने का दायरा इतना व्यापक हो कि भाषा के इन उपयोगों से उसका नाता न टूटे। इससे आगे बढ़ें तो हम पाएँगे कि भाषा हमें अपने परिवेश में कई रूपों में बिखरी मिलती है, जैसे– अखबार, साइनबोर्ड, पोस्टर, विज्ञापन आदि। इसके अतिरिक्त भाषा अपने साहित्यिक रूप में भी उपलब्ध होती है। ऐसे में हमारा प्रयास यह होना चाहिए कि स्कूल के दस–बारह वर्षों के दौरान विद्यार्थियों में हिंदी के व्यापक और विविध स्वरूप की गहरी समझ विकसित हो जाए। इस स्तर पर हिंदीतर मातृभाषा वाले छात्रों को हिंदी के रूप में एक ऐसा साथी मिलना चाहिए जो उनके अपने सास्ंकृतिक परिवेश के साथ सहज संबंध बनाते हुए उनके भीतर अपरिचित के प्रति स्नेह पूर्ण उपस्थिति पैदा कर सके ।

ज्ञान का विस्तार

स्कूली शिक्षा पूरी होने तक विद्यार्थी का भाषा–बोध और साहित्य–बोध इस सीमा तक विकसित हो जाए कि उसमें किसी रचना के बारे में स्वतंत्र राय बनाने का आत्मविश्वास पैदा हो सके। वह पाठ्यपुस्तकों की परिधि के बाहर भी किसी रचना से जुड़कर उस पर भावनात्मक और बौद्धिक प्रतिक्रिया कर सके। वह तरह–तरह के औपचारिक व अनौपचारिक विषय क्षेत्रों में प्रयुक्त होने वाली भाषा के रूपों से परिचित हो और उसका प्रयोग कर सके। वह संदर्भ और आवश्यकता के अनुसार विभिन्न किस्म की शैलियों से परिचित हो सके। विद्यार्थियों को भाषा की ताकत का अहसास हो। वह इस बात को समझे कि भाषा के माध्यम से हम केवल संप्रेषण ही नहीं करते, बल्कि जो हम सोचते और महसूस करते हैं उसे सुंदर, प्रभावशाली व्यंजनात्मक और पैने ढंग से अभिव्यक्त करने के लिए भाषा एक सशक्त साधन है। विद्यार्थी हिंदी की बारीकी और सुंदरता को परख सके। उसे यह ज्ञान हो कि हिंदी के माध्यम से यथार्थ और काल्पनिक दुनिया की रचना की जा सकती है। भाषा के माध्यम से विद्यार्थी का ज्ञानक्षेत्र इतना विस्तृत हो कि वह राष्ट्रीय समाचारपत्रों और पत्रिकाओं की परिधि में आने वाले व्यक्ति, परिवेश और समाज से जुड़े मुद्दों की सामान्य जानकारी रख सके।

द्वितीय भाषा के रूप में हिंदी (कक्षा 6 से 8)

प्रस्तावना

छठी से आठवीं कक्षा के बच्चे किशोरावस्था में कदम रख रहे होते हैं। यह दौर मन, मानस और शारीरिक परिवर्तन की दृष्टि से संवेदनशील होता है। इस नये संधि काल में स्कूल, कक्षा और शिक्षक की सकारात्मक भूमिका छात्र–छात्राओं की ऊर्जा और जिज्ञासा को सार्थक स्वस्थ दिशा दे सकती है ताकि मननशील और संवेदनशील व्यक्ति के रूप में उनका विकास हो सके। इसके लिए जरूरी है कि वे कक्षा के साथ भावनात्मक और बौद्धिक जुड़ाव महसूस कर सकें। सौंदर्यबोर्ध, साहित्यबोध और सामाजिक–राजनैतिक बोध के विकास की दृष्टि से स्कूली जीवन का यह चरण अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि इस चरण में ऐसे कई किस्म के बोधों और दृष्टियों के अंकुर फूटते हैं। चाहे भाषायी सौंदर्य हो या परिवेशगत कोई चीज सुंदर है तो क्यों है ? यदि कोई वस्तु, रचना, फिल्म आदि अच्छी है तो वे कौन से बिंदु हैं जो उसे अच्छा बनाते हैं, उनके बारे में स्पष्ट सोच होना बहुत ज़रूरी है। प्रारंभिक कक्षाओं में समझकर पढ़ना सीख लेने के बाद अब छात्र–छात्राएं पढ़ते समय किसी रचना से भावनात्मक रूप से जुड़ भी सकें और कोई नई किताब या रचना सामने आने पर उसे उठाकर पलटने और पढ़ने की उत्सुकता उनमें पैदा हो। समाचार पत्र के विभिन्न पन्नों पर क्या छपता है इस बात की जानकारी उन्हें हो। समाचार पत्र में छपी किसी खबर, लेख या कही गई किसी बात का निहितार्थ क्या है? छात्र–छात्राएं उसमें झलकने वाले सोच, पूर्वाग्रह और सरोकार आदि को पहचान पाएँ। कुल मिलाकर प्रयास यह होने चाहिए कि इस चरण के पूरा होने तक छात्र–छात्राएँ किसी भाषा, व्यक्ति, वस्तु, स्थान, रचना आदि का विश्लेषण करने, उसकी व्याख्या करने और उस व्याख्या को आत्मविश्वास व स्पष्टता के साथ अभिव्यक्त करने के अभ्यस्त होने लगें।

उद्देश्य

- निजी अनुभवों के आधार पर भाषा का सृजनशील प्रयोग।
- दूसरों के अनुभव से जुड़ पाना और उनके परिप्रेक्ष्य से चीजों, स्थितियों तथा घटनाओं को समझने की क्षमता का विकास।
- भाषा की बारीकी और सौन्दर्यबोध को सही रूप में समझने की क्षमता का विकास।
- दृश्य और श्रव्य माध्यमों की सामग्रियों (बाल साहित्य, पत्र–पत्रिकाएं, दूरदर्शन व कम्प्यूटर जनित कार्यक्रम, नाटक, सिनेमा, परिचर्चा, भाषण आदि) को पढक़र, देखकर और सुनकर समझने तथा उस पर स्वतंत्र व स्वाभाविक मौखिक एवं लिखित प्रतिक्रिया व्यक्त करने की क्षमता का विकास।
- विभिन्न साहित्यिक विधाओं और ज्ञान से सबंधित अन्य विषयों की समझ का विकास तथा उससे आनंद उठाने की क्षमता का विकास।
- पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त अभिनय, गीत, संवाद, परिचर्चा, अन्त्याक्षरी, घटना–वर्णन, प्रश्नोत्तरी, भाषण, खेल–कूद व अन्य महत्वपूर्ण पाठ्यक्रम सहगामी क्रियाकलापों के आधार पर भाषा और साहित्य को समझना।
- पठित, लिखित और सुने हुए भाषिक ज्ञान से संबंधित सामग्रियों का तार्किक दृष्टि से अध्ययन करने की प्रवृति का विकास।
- सरसरी तौर पर किसी पाठ को देखकर उसकी विषयवस्तु का पता करने के कौशल का विकास और उसमें किसी विशेष बिंदु को खोजने के लिए पाठ की बारीकी से जाँच करने की क्षमता का विकास।
- सुनी, पढ़ी और समझी हुई भाषा को सहज और स्वाभाविक लेखन द्वारा अभिव्यक्त करने की क्षमता का विकास।
- मौखिक और लिखित अभिव्यक्ति में सदंर्भ और आवश्यकतानुसार समुचित भाषा शैली को चुनने की समझ का विकास।
- भाषा की नियमबद्ध प्रकृति को पहचानना और उसका विश्लेषण करना।

पाठ्यसामग्री

छठी से आठवीं कक्षा में मातभृाषा हिंदी के शिक्षण में मदद देने के लिए जो पाठ्य् पुस्तक तैयार की जाए उसमें पंद्रह से अठारह पाठ हो सकते हैं। पाठों का चुनाव करते समय इस बात की सावधानी रखना जरूरी है कि वे आरंभिक शिक्षा व्यवस्था के छात्र–छात्राओं के संवेदना लोक के साथी बन सकें। पाठ कुछ पूर्वनिर्धारित सदेंशों को पहुँचाने के मकसद से गढ़े नहीं जाएँ। पाठ हमउम्र विद्यार्थियों के सपनों ,उम्मीदों आशकांओं और उनकी विस्ततृ हो रही दुनिया के सदंर्भ में प्रामाणिक प्रतीत होने चाहिए। जरूरी है कि अलग–अलग अनभुव क्षेत्रों से जुड़े लोगों के लिखे पाठ चुने जाएँ। आवश्यकतानुसार पाठगत सदंर्भों के आधार पर भाषा की सरंचनाओं की समकालीन शैलियों/रूपों को ध्यान में रखते हुए शिक्षण संदर्शिका भी तैयार की जा सकती है। विद्यार्थियों की रुचि और रुझान के अनुसार ही पास–पड़ोस सहित सम्पूर्ण परिवेश की भाषिक समृद्धि का भाषा, साहित्य व अन्य विषयगत शिक्षण युक्ति में अधिक से अधिक उपयोग किया जाना चाहिए। पाठ्यपुस्तकों के अतिरिक्त अभ्यास एवं परियोजना कार्य में भाषण, परिचर्चा, संवाद, श्रुतलेख, वाचन तथा विभिन्न समस्याओं पर वाद–विवाद जैसे कार्यों को शिक्षण विधि में शामिल कर विद्यार्थियों को अधिक से अधिक चिंतनशील और स्वावलंबी बनाया जा सकता है।

पूरक पाठ्यपुस्तकें :
तीनों कक्षाओं (6, 7, 8) के लिए एक–एक पुस्तकें निर्धारित की जाएगी, जिससे बच्चों में पठन रुचि का विकास हो सके।

शिक्षण युक्तियाँ

विद्यार्थियों की पढ़ने में रुचि जगाने एवं भाषा ज्ञान में वृद्धि के लिए इसका ध्यान रखना जरूरी है कि किताबें सिर्फ़ कहानी, कविता और उपन्यास न हों, बल्कि वे जानकारी और दूसरे क्षेत्रों से भी जुड़ी हुईं हों। स्कूल में वे सारी पुस्तकें उपलब्ध होनी चाहिए। पूरक सामग्री का इस्तेमाल छात्र–छात्राओं में पढ़ने की रुचि विकसित करने के मकसद से किया जाना चाहिए।

- समसामयिक मुद्दों और बच्चों के संज्ञानात्मक स्तर से जुड़े मुद्दों पर कक्षा में समूह में परिचर्चा आयोजित की जा सकती है।
- बच्चों द्वारा पढ़ी गई कहानियों का समूह में नाट्य–रूपांतरण आयोजित किया जा सकता है।
- पढ़ी हुई रचनाओं के आधार पर अपनी रचना के साथ नई रचना कर सकते हैं।
- चित्रों व फोटोग्राफों का छात्र–छात्राएँ गहराई से मौखिक या लिखित विश्लेषण करेंगे।
- बच्चों को मौखिक प्रश्न पूछने के लिए और रचनाओं पर सच्ची प्रतिक्रिया करने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए।
- शब्दकोशों से बच्चों को परिचित कराने के लिए उससे जुड़ी हुई गतिविधियाँ कराई जा सकती हैं।
- अख़बारों, पत्रिकाओं और विभिन्न विषयों की किताबों का भरपूर इस्तेमाल किया जाना चाहिए।
- विज्ञापनों, पोस्टरों, साइनबोर्ड और भाषा के अन्य उपयोगों का विश्लेषण कक्षा शिक्षण में किया जाना चाहिए।
- पठन–सामग्री के संदर्भ के माध्यम से छात्र–छात्राओं का ध्यान भाषा की बारीकी की ओर दिलाया जा सकता है। ऐसे शब्दों और मुहावरों का अर्थ लिखकर वाक्य बनाने की बजाय छात्र–छात्राओं को संदर्भ में शब्द या मुहावरे का प्रयोग करने को कहा जाए।

परीक्षा और मूल्यांकन

परीक्षा का प्रयोग शिक्षा में गुणात्मक सुधार के लिए होना चाहिए। विद्यार्थियों के भाषिक, साहित्यिक और अन्य विषयक ज्ञान ग्रहण करने के स्वाभाविक कौशल को स्वाभाविक और व्यावहारिक रूप में ही कक्षाओं में पाठ्यपुस्तक पढ़ाने–लिखाने के अतिरिक्त अन्य ज्ञान से संबंधित क्रिया–कलापों के समुचित अवलोकन और आकलन की क्रिया अनवरत जारी रहनी चाहिए। प्रश्न निर्माण में भी प्रश्न–पत्र निर्माता को ध्यान रखना चाहिए कि उसमें पाठों के चयन के लिए जो आवश्यक शर्तें हैं, उसकी क्षति तो नहीं हो रही है इसके लिए प्रश्न–पत्र निर्माता शिक्षकों के लिए भी निर्देश आवश्यक है, जिसे शिक्षक निर्देशिका में स्पष्टतः उल्लेखित किया जाना चाहिए। मूल्यांकन की प्रकृति मानवीय, विद्यार्थी–मित्रवत, उत्तरदायीपूर्ण और पारदर्शी

होनी चाहिए।
लिखित और मौखिक परीक्षा के अंकों का अनुपात 80/20 होना चाहिए।

मूल्यांकन

सतत् मूल्यांकन और वार्षिक मूल्यांकन का अनुपात 80/20 का होगा।

- छात्र–छात्राओं के अपने अनुभवों से विकसित समझ को कक्षा में सीखने–सिखाने की प्रक्रिया के दौरान समूह में चर्चा और लिखित प्रश्नों के माध्यम से आँका जा सकता है।
- विभिन्न उद्देश्यों के लिए किए जाने वाले तरह–तरह के लेखन कार्यों (जैसे–पोस्टर, विज्ञापन, सूचना–संदेश डायरी लेखन आदि) को भी मूल्यांकन में शामिल किया जा सकता है।
- वार्षिक मूल्यांकन के लिए प्रश्न–पत्र तैयार करते समय इस पाठ्यक्रम के पहले अध्याय में दिए गए भाषा–शिक्षण के उद्देश्यों और पाठ्यपुस्तक में दिए गए प्रश्नों की प्रकृति को ध्यान में रखा जाए। पाठ की समझ से संबंधित ऐसे प्रश्न न हों जिनके उत्तर रटने की गुंजाइश हो। प्रश्न ऐसे हों जिनके उत्तर बच्चे अपनी कल्पना से दें या जिनके उत्तर लिखने के लिए छात्र–छात्राएँ पाठ में अनकही, अंतर्निहित बातों को पकड़ने का प्रयास करें।
- व्याकरण के पक्षों और शब्दों की बारीकी की समझ का मूल्यांकन संदर्भ में किया जाए। पाठ्यपुस्तक के बाहर की किसी रचना में संज्ञा, क्रिया विशेषण, पदबंध, आदि को ढूँढ़ने और पुनरुक्ति (संज्ञा, विशेषण आदि) की अर्थ–छटाओं को पहचानने से संबंधित प्रश्न दिए जा सकते हैं। मुहावरों के प्रयोग से संबंधित प्रश्न पूछने के लिए छात्र–छात्राओं को अपनी कल्पना से चार–पाँच वाक्यों में उपयुक्त संदर्भ रचने को कहा जा सकता है। वाक्यों में शब्दक्रम परिवर्तन का अर्थ पर प्रभाव, क्रिया और कर्त्ता/कर्म की अन्विति,– इस प्रकार के कई अन्य वाक्य–संरचना से संबंधित प्रश्न पूछे जा सकते हैं।

कक्षा छठी हिन्दी परीक्षाओं हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन 2024–25

	विषयवस्तु	कुल भार
1.	अपठित गद्यांश (चिन्तन क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल)	10
	अपठित गद्यांश	
	व्याकरण पाठ्यपुस्तक में दिए गए भाषा–अध्ययन के आधार पर प्रथम सत्र	20
1.	संज्ञा (द्रव्यवाचक एवं समूहवाचक संज्ञा)	
2.	सर्वनाम	
3.	विशेषण	
4.	शब्द भंडार श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द पर्यायवाची शब्द विलोम शब्द लिंग वचन	
5.	मुहावरे	
	व्याकरण पाठ्यपुस्तक में दिए गए भाषा–अध्ययन के आधार पर द्वितीय सत्र	
1.	क्रिया	
2.	काल	
3.	क्रियाविशेषण	
4.	शब्द भंडार पर्यायवाची शब्द विलोम शब्द लिंग वचन	
5	उददेश्य विधेय	
7.	वाक्य शोधन	
8.	मुहावरे	

9.	विराम चिह्न	
पाठ्य पुस्तक सोन चिरैया भाग– 6		25
1	वाक्य बनाइए	
2	रिक्त स्थान	
3	लघु प्रश्न (विकल्प सहित)	
4	दीर्घ प्रश्न	
5	विचारात्मक प्रश्न	
लेखन		25
1	संकेत बिंदुओं पर आधारित व्या्वहारिक जीवन से जुड़े हुए विषय पर अनुच्छेद। (विकल्प सहित)	
2	अनौपचारिक एवं औपचारिक विषय से संबंधित पत्र। (विकल्प सहित)	
3	किसी एक स्थिति पर 40 से 50 शब्दों के अंतर्गत संवाद लेखन। (विकल्प सहित)	
4	पोस्टर तैयार करना। (विकल्प सहित)	
5	चित्र वर्णन। (विकल्प सहित)	
	कुल	80
1	श्रवण तथा वाचन	10
2	परियोजना	10
	कुल अंक	100

निर्धारित पुस्तकें :-

1 सोन चैरिया– 6

2 मैं और मेरा व्याकरण

कक्षा सातवीं हिन्दी परीक्षाओं हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन 2024–25

	परीक्षा भार विभाजन	
	विषयवस्तु	*कुल भार*
1.	अपठित गद्यांश (चिन्तन क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल)	10
	अपठित गद्यांश	
	व्याकरण पाठ्यपुस्तक में दिए गए भाषा–अध्ययन के आधार पर *प्रथम सत्र*	20
1.	सर्वनाम	
2.	उपसर्ग और प्रत्यय	
3.	विराम –चिह्न	
4.	शब्द भंडार श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द पर्यायवाची शब्द विलोम शब्द	
5.	वाक्य शोधन	
6.	लिंग वचन	
7.	मुहावरे	
	व्याकरण पाठ्यपुस्तक में दिए गए भाषा–अध्ययन के आधार पर द्वितीय सत्र	
1.	क्रिया	
2.	काल	
3.	क्रियाविशेषण	
4.	विशेषण	
5.	शब्द भंडार पर्यायवाची शब्द विलोम शब्द श्रुतिसमभिन्नार्थक शब्द	
6.	वाक्य (अर्थ के आधार पर)	
7.	वाक्य शोधन	
8.	मुहावरे	

पाठ्य पुस्तक सौन चिरैया भाग– 7		25
1	लघु प्रश्न (विकल्प सहित)	
2	दीर्घ प्रश्न	
3	विचारात्मक प्रश्न	
लेखन		25
1	संकेत बिंदुओं पर आधारित व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए किसी एक विषय पर 50 से 70 शब्दों में अनुच्छेद। (विकल्प सहित)	
2	अनौपचारिक एवं औपचारिक विषय से संबंधित पत्र।(विकल्प सहित)	
3	किसी एक स्थिति पर 40 से 50 शब्दों के अंतर्गत संवाद लेखन।(विकल्प सहित)	
4	चित्र लेखन 40–50 शब्दों में विषय से संबंधित लेखन	
5	सुंदर चित्रों सहित विज्ञापन। (विकल्प सहित) (30 से 40 शब्दों में)	
	कुल	80
1	श्रवण तथा वाचन	10
2	परियोजना	10
	कुल अंक	100

निर्धारित पुस्तकें :-

1 सोन चैरिया – 7

2 मैं और मेरा व्याकरण

कक्षा आठवीं हिन्दी परीक्षाओं हेतु पाठ्यक्रम निर्देशन 2024–25

	परीक्षा भार विभाजन	
	विषयवस्तु	कुल भार
1.	अपठित गद्यांश (चिन्तन क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल)	10
	अपठित गद्यांश	
	व्याकरण पाठ्यपुस्तक में दिए गए भाषा–अध्ययन के आधार पर **प्रथम सत्र**	20
2.	सर्वनाम	
3.	विशेषण	
4.	शब्द भंडार पर्यायवाची शब्द विलोम शब्द	
5.	वाक्य शोधन	
6.	उपसर्ग , प्रत्यय, समास	
7.	मुहावरे	
8.	विराम चिह्न	
	व्याकरण पाठ्यपुस्तक में दिए गए भाषा–अध्ययन के आधार पर **द्वितीय सत्र**	
1.	क्रिया	
2.	काल	
3.	क्रियाविशेषण	
4.	संबधबोधक, समुच्चयबोधक, विस्मयादिबोधक	
5.	शब्द भंडार पर्यायवाची शब्द विलोम शब्द	
6.	वाक्य विचार	

7.	वाक्य शोधन	
8.	मुहावरे	
पाठ्य पुस्तक सौन चिरैया भाग– 8		25
1	लघु प्रश्न (विकल्प सहित)	
2	दीर्घ प्रश्न	
3	विचारात्मक प्रश्न	
	लेखन	25
1	संकेत बिंदुओं पर आधारित व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए किसी एक विषय पर 50 से 70 शब्दों में अनुच्छेद। (विकल्प सहित)	
2	अनौपचारिक एवं औपचारिक विषय से संबंधित पत्र।(विकल्प सहित)	
3	किसी एक विषय पर 40 से 50 शब्दों के अंतर्गत कहानी लेखन।(विकल्प सहित)	
4	विज्ञापन रचना (विकल्प सहित)	
5	सूचना लेखन (विकल्प सहित)	
	कुल	80
1	श्रवण तथा वाचन	10
2	परियोजना	10
	कुल अंक	100

निर्धारित पुस्तकें :-

1 सोन चैरिया – 8

2 मैं और मेरा व्याकरण

मन - मानचित्रण(मैपिंग) कक्षा 6 हिन्दी विषय सी. बी. एस. सी. द्वारा अपनाए - सीखने के प्रतिफल के साथ
विभिन्न प्रकार की ध्वनियों, जैसे -बारिश, हवा, रेल, बस, फेरीवाला आदि) को सुनने के अनुभव, किसी वस्तु के स्वाद आदि के अनुभव को अपने ढंग से मौखिक/सांकेतिक भाषा में प्रस्तुत करते हैं।
सुनी, देखी गई बातों जैसे- स्थानीय सामाजिक घटनाओं, कार्यक्रमों और गतिविधियों पर बेझिझक बात करते हैं और प्रश्न करते हैं।
देखी, सुनी रचनाओं/घटनाओं/मुद्दों पर बातचीत को अपने ढंग से आगे बढ़ाते हैं जैसे-किसी कहानी को आगे बढ़ाना।

रेडियो, टी-वी-, अखबार, इंटरनेट में देखी/सुनी गई खबरों को अपने शब्दों में कहते हैं। विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से बताते हैं जैसे- आँखों से न देख पाने वाले साथी का यात्रा-अनुभव।

अपने परिवेश में मौजूद लोककथाओं और लोकगीतों के बारे में जानते हुए चर्चा करते हैं।

अपने से भिन्न भाषा, खान-पान, रहन-सहन संबंधी विविधताओं पर बातचीत करते हैं।

सरसरी तौर पर किसी पाठ्यवस्तु को पढ़कर उसकी विषयवस्तु का अनुमान लगाते हैं।

किसी पाठ्यवस्तु की बारी की से जाँच करते हुए उसमें किसी विशेष बिंदु को खोजते हैं, अनुमान लगाते हैं, निष्कर्ष निकालते हैं।

हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिका, कहानी, जानकारीपरक सामग्री, इंटरनेट पर प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझ कर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद-नापसंद, राय, टिप्पणी देते हैं।

भाषा की बारीकियों/व्यवस्था/ढंग पर ध्यान देते हुए उस की सराहना करते हैं, जैसे- कविता में लय-तुक, वर्ण-आवृत्ति (छंद) तथा कहानी, निबंध में मुहावरे, लोकोक्ति आदि।

विभिन्न विधाओं में लिखी गई साहित्यिक सामग्री को उपयुक्त उतार-चढ़ाव और सही गति के साथ पढ़ते हैं।

हिंदी भाषा में विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़ते हैं।

नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हैं और उनके अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते हैं।

हिंदी भाषा में विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़ते हैं।

नए शब्दों के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हैं और उनके अर्थ समझने के लिए शब्दकोश का प्रयोग करते हैं।

विविधकलाओं जैसे- हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला आदि से जुड़ी सामग्री में प्रयुक्त भाषा के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हुए उस की सराहना करते हैं। दूसरों के द्वारा अभिव्यक्त अनुभवों को ज़रूरत के अनुसार लिखना जैसे सार्वजनिक स्थानों (जैसे-चौराहों, नलों, बस अड्डे आदि) पर सुनी गई बातों को लिखना।

हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिका, कहानी, जानकारी परक सामग्री, इंटरनेट पर प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर-पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद-नापसंद, टिप्पणी को लिखित या ब्रेल भाषा में व्यक्त करते हैं।

विभिन्न विषयों, उद्देश्यों के लिए उपयुक्त विराम-चिह्नों का उपयोग करते हुए लिखते हैं।

विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं।

विभिन्न संदर्भों में विभिन्न उद्देश्यों के लिए लिखते समय शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरे आदि का उचित प्रयोग करते हैं।

मन - मानचित्रण(मैपिंग) कक्षा 7 हिन्दी विषय सी. बी. एस. सी. द्वारा अपनाए - सीखने के प्रतिफल के साथ
विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर समूह में चर्चा करते हैं ।
किसी सामग्री को पढ़ते हुए लेखक द्वारा रचना के परिपेक्ष्य में कहे गए विचार को समझकरऔरअपने ढंग से मौखिक/ सांकेतिक भाषा में व्यक्त करते हैं ।
किसी चित्र या दृश्य को देखने के अनुभव को अपने ढंग से मौखिक, /सांकेतिक भाषा में व्यक्त करते हैं।
पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं/ परिचर्चा करते हैं ।
अपने परिवेश में मौजूद लोक-कथाओं और लोकगीतों के बारे में चर्चा करते हैं और उनकी सराहना करते हैं ।
विविधकलाओं , जैसे - हस्तकला, वास्तुकला,खेती-बाड़ी, नृत्यकलाऔर इनमें प्रयोग होने वाली भाषा के बारे में जिज्ञासा व्यक्त करते हैं, उन्हें समझने का प्रयास करते हैं ।
विभिन्न स्थानीय सामाजिक एवं प्राकृतिक मुद्दों/घटनाओं के प्रति अपनी तार्किक प्रतिक्रिया देते हैं, जैसे - बरसात के दिनों में हरा भरा होना? विषय पर चर्चा ।
विभिन्न संवेदनशीलमु द्दों/विषयों, जैसे - जाति,धर्म, रंग, जेंडेर, रीति-रिवाज के बारे में मौखिक रूप से अपनी तार्किक समझ अभिव्यक्त करते हैं ।
किसी पाठ्यवस्तु को पढ़कर उसकी उपयोगिता के बारे में बताते हैं ।
किसी पाठ्यवस्तु की बारी की से जाँच करते हुए उसमें किसी विशेष बिंदु को खोजते हैं ।

पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं ।
विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों,मुहावरों,लोकोक्तियों को समझते हुए उनकी सराहना करते हैं।
कहानी ,कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीक़ों और शैलियों को पहचानतेहैं, जैसे - वर्णात्मक, भावात्मक,प्रकृति, चित्रण आदि ।
किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए ज़रूरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठी या शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री, जैसे - शब्दकोश, मानचित्र, इंटर्नेट या अन्य पुस्तकों की मदद लेते हैं।
विविध कलाओं जैसे- हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला आदि से जुड़ी सामग्री में प्रयुक्त भाषा के प्रति जिज्ञासा व्यक्त करते हुए उसकी सराहना करते हैं।
भाषा की बारीकियों/व्यवस्था तथा नए शब्दों का प्रयोग करते हैं, जैसे - किसी कविता में प्रयुक्त शब्द विशेष, पदबंध का प्रयोग - आप बढ़ते हैं तो बढ़ते ही चले जाते हैं या जल रेल जैसे प्रयोग।
विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं, जैसे - अपनी गाँव की चौपाल की बातचीत या अपने मोहल्ले के लिए तरह तरह के कार्य करने वालों की बातचीत ।
हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार-पत्र/पत्रिका, कहानी, जानकारिपरक सामग्री, इंटर्नेट प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद नापसंद के पक्ष में लिखित या ब्रेल भाषा में अपने तर्क रखते हैं।
अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं।
विभिन्न विषयों और उद्देश्यों के लिए लिखते समय उपयुक्त शब्दों, वाक्य संरचनाओं, मुहावरों, लोकोक्तियों, विराम - चिन्हों एवं अन्य व्याकरणिक इकाइयों, जैसे - काल, क्रिया विशेषण, शब्द युग्म आदि का प्रयोग

किसी रचना को पढ़कर उसके सामाजिक मूल्यों पर चर्चा करते हैं। उसके कारण जानने की कोशिश करते हैं जैसे-अपने आस-पास रहने वाले परिवारों और उनके रहन-सहन पर सोचते हुए प्रश्न करते हैं-रामू काका की बेटी स्कूल क्यों नहीं जाती?
विभिन्न प्रकार की सामग्री, जैसे कहानी, कविता, लेख, रिपोर्ताज,संस्मरण,निबंध, व्यंग आदि को पढ़ते हुए अथवा पाठ्यवस्तु की बारी की से जाँच करते हुए उसका अनुमान लगाकर, विश्लेषण करते हैं, विशेष बिंदु को खोजते हैं।
पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं ।
विभिन्न पठन सामग्रियों में प्रयुक्त शब्दों, मुहावरों, लोकोक्तियों को के अर्थ समझते हुए उनकी सराहना करते हैं।
कहानी, कविता आदि पढ़कर लेखन के विविध तरीकों और शैलियों को पहचानते हैं जैसे- वर्णनात्मक, विवरणात्मक, भावात्मक, प्रकृति चित्रण आदि।
विभिन्न पठन सामग्रियों में को पढ़ते हुए उनके शिल्प की सराहना करते हैं और अपने स्तरानुकूल मौखिक, लिखित, ब्रेल/ सांकेतिक रूप में उसके बारे में अपने विचार व्यक्त करते हैं।
किसी पाठ्यवस्तु को पढ़ने के दौरान समझने के लिए ज़रूरत पड़ने पर अपने किसी सहपाठीया शिक्षक की मदद लेकर उपयुक्त संदर्भ सामग्री जैसे - शब्दकोश, मानचित्र, इंटर्नेटया अन्य पुस्तकों की मदद लेते हैं ।
अपने पाठक और लिखने के उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी तरीके से लिखते हैं।
पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उन पर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित या ब्रेल भाषा में अभिव्यक्ति करते हैं।

मन - मानचित्रण(मैपिंग) कक्षा 8 हिन्दी विषय सी. बी. एस. सी. द्वारा अपनाए - सीखने के प्रतिफल के साथ
विभिन्न विषयों पर आधारित विविध प्रकार की रचनाओं को पढ़कर चर्चा करते हैं, जैसे - पाठ्य पुस्तक में किसी पक्षी के बारे में पढ़कर पक्षियों पर लिखी गई सालिम अली की किताब पढ़कर चर्चा करते हैं।
हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार, पत्र-पत्रिका, कहानी, जानकारिपरक सामग्री, इंटर्नेट, ब्लॉग पर छपने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद - नापसंद, टिप्पणी, राय, निष्कर्ष आदि को मौखिक/सांकेतिक भाषा में अभिव्यक्त करते हैं।
पढ़ी गई सामग्री पर चिंतन करते हुए बेहतर समझ के लिए प्रश्न पूछते हैं/ परिचर्चा करते हैं ।
अपने परिवेश में मौजूद लोक-कथाओं और लोकगीतों के बारे में चर्चा करते हैं और उनकी सराहना करते हैं ।
पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उनपर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में मौखिक/सांकेतिक भाषा में बताते हैं।
विभिन्न संवेदनशील मुद्दों/विषयों जैसे-जाति, धर्म,रंग, जेंडर, रीति-रिवाजों के बारे में अपने मित्रों, अध्यापकों या परिवार से प्रश्न करते हैं जैसे-अपने मोहल्ले के लोगों से त्योहार मनाने के तरीके पर बातचीत करना।

भाषा की बारीकियों/व्यवस्था तथा नए शब्दों का प्रयोग करते हैं, जैसे - किसी कविता में प्रयुक्त शब्द विशेष, पदबंध का प्रयोग - आप बढ़ते हैं तो बढ़ते ही चले जाते हैं या जल रेल जैसे प्रयोग।
विभिन्न अवसरों/संदर्भों में कही जा रही दूसरों की बातों को अपने ढंग से लिखते हैं, जैसे - अपनी गाँव की चौपाल की बातचीत या अपने मोहल्ले के लिए तरह तरह के कार्य करने वालों की बातचीत ।
हिंदी भाषा में विभिन्न प्रकार की सामग्री (समाचार-पत्र/पत्रिका, कहानी, जानकारिपरक सामग्री, इंटर्नेट पर प्रकाशित होने वाली सामग्री आदि) को समझकर पढ़ते हैं और उसमें अपनी पसंद नापसंद के पक्ष में लिखित या ब्रेल भाषा में अपने तर्क रखते हैं।
अपने अनुभवों को अपनी भाषा शैली में लिखते हैं।लेखन के विविध तरीकों और शैलियों का प्रयोग करते हैं जैसे विभिन्न तरीक़ों से कहानी,कविता, निबंध,अनुभव आदि लिखना।
दैनिक जीवन से अलग किसी घटना/स्थिति पर विभिन्न तरीक़े से सृजनात्मक ढंग से लिखते हैं, जैसे सोशल मीडिया पर नोट्बुक पर या संपादक के नाम पत्र आदि।
विविधकलाओं, जैसे - हस्तकला, वास्तुकला, खेती-बाड़ी, नृत्यकला और इनमें प्रयोग होने वाली भाषा (रजिस्टर) का सृजनात्मक प्रयोग करते हैं, जैसे - कला के बीज बोना, मनमोहक मुद्राएँ, रस की अनुभूति।
अपने पाठक और लिखने के उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए अपनी बात को प्रभावी तरीके से लिखते हैं।
अभिव्यक्ति की विविध शैलियों/रूपण को पहचानते हैं, स्वयं लिखते हैं, जैसे - कविता, कहानी, निबंध आदि ।
पढ़कर अपरिचित परिस्थितियों और घटनाओं की कल्पना करते हैं और उनपर अपने मन में बनने वाली छवियों और विचारों के बारे में लिखित/ब्रेल भाषा में अभिव्यक्त करते हैं।